RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2024-26

पिघलता हिमालय

वर्ष 40 अंक 42 हल्द्वानी सम्वत् 2081 सोमवार 24 मार्च 2025 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

नरेन्द्र नेगी का कटाक्ष

खूब थिरके प्रेमचन्द

प्रधानमंत्री तक पहुँचा सन्देश

बिरजू मयाल ने भी किया धमाल

गोलज्यू को खून से लिखा पत्र

गार्गी नदी में अर्घ्य के साथ आक्रोश

दिल्ली में भी आन्दोलन की गूंज

दिल्ली। केबिनेट मंत्री प्रेमचन्द के बिगड़े बोल के खिलाफ कांग्रेस, उक्रांद, बेरोजगार संघ, राज्य आन्दोलनकारी, प्रवासी व पूर्व सैनिकों के संगठन सड़कों पर हैं। आन्दोलन की गूंज देश की राजधानी दिल्ली में भी है। बेरोजगार संघ ने दिल्ली में विशाल मशाल जुलूस निकालते हुए राज्य आन्दोलन की याद दिला दी। कबीना मंत्री के अलावा स्पीकर ऋतु खण्डूरी व

शेष पृष्ठ 2 पर

पहाड़ी आर्मी ने उठाई मूल निवास व्यवस्था की मांग

पिथौरागढ़। चम्पावत से शुरू हुई पहाड़ी आर्मी यात्र का जगह-जगह स्वागत किया गया है। पहाड़ी आर्मी के संस्थापक हरीश रावत ने कहा क पिछले 25 साल से राजनीतिक पार्टियों ने प्रदेश को हाशिये पर डाल दिया है। पहाड़ के संसाधनों, सांस्कृतिक पहचान पर किसी भी रूप में अतिक्रमण स्वीकार नहीं किया जायेगा। इसके लिये मूल निवास व्यवस्था लागू होनी चाहिये।

क्षेत्रवाद पर सीएम की चेतावनी हास्यास्पद : धस्माना

देहरादून। कैबिनेट मंत्री प्रेमचन्द के बोलों से राज्यभर में फैले असन्तोष को दबाने के लिये अब भाजपा सरकार व भाजपा अप्रत्यक्ष धमकियों का सहारा ले रही है। मुख्यमंत्री क्षेत्रवाद के नाम पर चेतावनी दे चुके हैं जो हास्यास्पद है। प्रदेश कांग्रेस कमेटी के वरिष्ठ उपाध्यक्ष सूर्यकान्त धस्माना ने मुख्यालय में पत्रकारों से वार्ता करते हुए उक्त बातें कहीं। साथ ही कहा मंत्री प्रेमचन्द पर कार्यवाही होनी चाहिये।

जनता का विरोध, मंत्री का इस्तीफा

असहज हो चुकी भाजपा के पास इसके अलावा रास्ता नहीं था

मामले में राजनीति रोटी सेकने के अलावा गोलमोल बोल

अस्मिता से खिलवाड़ करने वाले बख्शे नहीं जाएंगे : पुष्कर धामी

इस हठधर्मिता के खिलाफ एक लड़ाई और लड़ी जाएगी : ऐरी

हम अपने और अपने पहाड़ के खिलाफ चुप नहीं बैठेंगे : लखपत

जनप्रतिनिधि को जनता माफ नहीं कर सकती : त्रिवेन्द्र सिंह रावत

इस बार छोड़ दिया, फिर गलती की तो छोड़ेंगे नहीं : हरीश धामी

स्वाभिमान के सवाल पर कोई समझौता नहीं हो सकता : डिमरी

जिम्मेदार व्यक्ति इतना कलुसित कैसे हो सकता है : हरीश रावत

मंत्री प्रेमचन्द पर उनके दबदबे और अभद्र टिप्पणी का आरोप

कार्यालय प्रतिनिधि

मंत्री प्रेमचन्द अग्रवाल के बिगड़े बोल का प्रभाव पूरे प्रदेश में इस कदर बना हुआ है कि ऋषिकेश आन्दोलनों की जड़ बन चुका है और पहाड़-मैदान की आड़ में दबंगता करने वाले सिर उठा रहे हैं। प्रेमचन्द ने अपने को राज्य आन्दोलनकारी बताते हुए पहाड़ प्रेम की बात कही और इस्तीफा दे डाला है लेकिन पूरी पड़ताल को लेकर जनता उबाल पर है।

बताते चलें कि जनता के भारी विरोध के बाद प्रदेश के वित्तमंत्री प्रेमचन्द अग्रवाल ने होली खेलने के बाद अपना इस्तीफा सीएम को सौंप दिया। मंत्री के इस्तीफे के बारे में माना जा रहा है कि असहज हो चुकी भाजपा के शीर्ष ने मंत्री को हटाने की तैयारी कर ली थी क्योंकि जिस प्रकार से उनका विरोध बढ़ता जा रहा था वह बचाव के लिये जरूरी था। लेकिन विरोध के सुर अभी भी थम नहीं रहे हैं। आन्दोलन कारियों ने प्रेमचन्द के पूर्व कार्यों, उनकी सम्पत्ति की जाँच सहित तमाम मांगें उठाई हैं।

दुर्गन्ध तो दुर्गन्ध है चाहें कहीं की हो। उत्तराखण्ड में इस बार पूरी होली में मंत्री प्रेमचन्द को लेकर उबाल बना रहा और पूरा राजनीतिक परिदृश्य नरम-गरम दिखाई दे रहा है। दरअसल पर्वतीय प्रदेश बनने के बाद से इसे ‘चरा’ रहे नेता-ठेकेदार पहाड़-मैदान के नाम पर अपने काम सीधे कर रहे हैं। चरने-चराने की इस परम्परा में सही की सूझ के बजाय दबंगई को बढ़ावा मिला है। यह सब समाज को तोड़ने वाली प्रवृत्तियां हैं। पहाड़-मैदान की दुर्गन्ध ठीक नहीं है।

उत्तराखण्ड के संसदीय कार्यमंत्री प्रेमचन्द अग्रवाल द्वारा सदन में जिस दिन से टिप्पणी की गई, तब से लगातार विपक्ष द्वारा उन्हें घेरा गया। सत्ता पक्ष की ओर से भी नरम-गरम रुख दिखाते हुए जिम्मेदारों को नपा तुला बोलने की हिदायत दी गई। विभिन्न संगठनों ने गैरसैण सहित अन्य जगह स्वाभिमान रैली निकालने के साथ ही इस मसले पर सवाल उठाये हैं। गौरव सेनानी स्वाभिमान रैली में बड़ी संख्या में पूर्व सैनिक उमड़ पड़े। गैरसैण में निकली विशाल रैली में जनसैलाब उमड़ पड़ा जिसने प्रेमचन्द का पुतला फूंकने के अलावा इन्हें संरक्षण देने वालों के खिलाफ नारेबाजी की। हल्द्वानी में भी स्वाभिमान रैली में लोगों ने नारेबाजी करते हुए प्रदर्शन किया। जब प्रधानमंत्री एक दिवसीय शीतकालीन यात्रा पर उत्तरकाशी पहुँचे उसी दिन गैरसैंण में विशाल प्रदर्शन जनता के द्वारा किया गया। उत्तराखण्ड की आक्रोशित जनता ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी तक को उनके दौरे के समय सन्देश पहुँचा दिया। रामनगर, नैनीताल के विरजू मयाल नामक युवा ने तो अपने सहज अंदाज में भ्रष्टाचार व मंत्री प्रेमचन्द के खिलाफ तंज कसते हुए धमाल ही मचा रखा है। अल्मोड़ा

शेष पृष्ठ 2 पर

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

सवाल पहाड़-मैदान का नहीं स्वाभिमान का है

उत्तराखण्ड में कबीना मंत्री प्रेमचन्द अग्रवाल को लेकर जिस तरह का उबाल पिछले कई दिनों से बना हुआ है दरअसल वह पहाड़-मैदान सवाल नहीं बल्कि स्वाभिमान की बात है। इस पूरे प्रकरण में यह भी साफ दिखाई दे रहा है कि पहाड़ को खोखला करने वालों में इसके अपने हैं।

मंत्री प्रेमचन्द्र ने तैस में कही बातों के लिये क्षमा मांगते हुए कहा है कि वह उत्तराखण्ड से प्रेम करते हैं। फिर भी सवाल उठता है कि जब आम जनता उन्हें सड़क पर खड़े होकर गरिया रही हो उन्हें पद छोड़ देना चाहिये था। वह जनता को बता देते कि समाज के एकता के लिये मंत्री पद एक हिस्सा मात्र है लेकिन वह राजनीति के गुणा-भाग लगाते रहे। अन्य मंत्री विधायक भी दूसरे तरीके से सोचने लगे क्योंकि उन्हें वोट चाहिये, सुविधा चाहिये, लाभ चाहिये। इससे भी ज्यादा उन्हें अपने हर प्रकार के बचाव के लिये सत्ता और पार्टी की आड़ चाहिये। जनाक्रोश के तूफान में पार्टी हाईकमान को भी विवश होना पड़ा और अन्ततः मंत्री को इस्तीफा दिया।

दूसरी ओर यह भी विचारणीय बात है कि विधायक-मंत्री चाहे जो भी बने हैं या बनते हैं, उन्हें अवसर देने वाले कौन हैं? उन्हें मसालने वाले कौन हैं? जब किसी को जनप्रतिनिधि बनाया गया है तो सदन में वे ही जनता की आवाज होगा। इन हालातों में किसका आन्दोलन, कैसा आन्दोलन.........। इसलिये बहुत सावधान रहने की जरूरत है। उक्त प्रकरण से सबको सीख लेनी चाहिये कि समाज में वैमनस्यता न फैले।

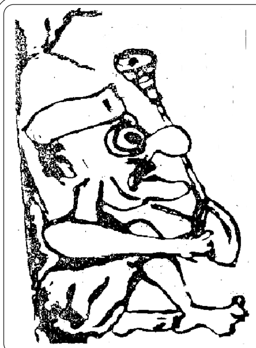

फसक

दाज्यू, राजनीति की चाट चटपटी होने वाली ठैरी

सण्ड-मुसण्ड को चाहे लट्ठ से चूटो, फर्क नहीं पड़ता है बल

दाज्यू, अपना धपुवा आजकल रेता-बजरी सारने का धन्धा कर रहा है। कह रहा है- 'चाहे जिसकी सरकार हो, खरोड़ा-खरोड़ होनी चाहिये। बीच-बीच में भण्डारा करना होता है।' दाज्यू, धपुवा पहले भी पुलिस के चक्कर में पड़ चुका है लेकिन उसे यह सब दाल-भात लगता है। दाज्यू, सण्ड-मुसण्ड को चाहे लट्ठ से चूटो, फर्क नहीं पड़ता है बल। दाज्यू, होली के बाद भी नरैण दा गीत गा रहे हैं- 'मत मारो प्रेम लाला पिचकारी।' प्रेमचन्द ने डाड़ मारते हुए इस्तीफा दे डाला। राजनीति की चाट, चूरन, चाकलेट का कुछ पता नहीं। सोचा था पूर्णागिरी मेले में घूम आएंगे लेकिन वह स्वाभिमान रैली में जाने वालों की हकाहाक देखते हुए गली में घुस गये। दाज्यू, राजनीति की चाट चटपटी होने वाली ठैरी। तभी तो प्रेमचन्द 'मेरो बाबा गणेश....प्वां-प्वां.....सररररर.. ...।' गीतों में खूब ठुमके लगाते रहे।

दाज्यू, राजनीति की चटपटी तत्काल बहुत स्वादिष्ट लगती है लेकिन इसकी मिर्च का असर बाद को दिखाई देता है। आगरा कालेज के पूर्व प्रोफेसर और कृष्णा कालेज के मालिक के.एस.राणा गाजियाबाद में गिरफ्तार हो गये। कुमाऊँ विश्वविद्यालय में भी कुलपति पद का भूषण रह चुके राणा पर आरोप है कि उन्होंने ओमान का फर्जी हाईकमिश्नर बनकर वीआईपी प्रोटोकॉल चाहा। दाज्यू, गद्दीदार कमरों, कारों, कोठियों में बैठने के बाद वीआईपी व्यववस्था का मन तो करने ही वाला ठैरा। देखो जरा, कितने ही लपुवा-झपुवा सटर-पटर करके दिन काट रहे हैं। सोशल मीडिया पर उधम काटते रहो, बांकी आप जानने ही वाले ठैरे। चटपटी चीजें जिबड़ी की सहेली हुई।

-तुम्हारा भुली झकरुवा

स्वाभिमान रैली के......

प्रथम पृष्ठ का शेष

में जबर्दस्त प्रदर्शन के अलावा कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने मंत्री को पद से हटाने की मन्नत मांगते हुए गोलज्यू को खून से लिखा पत्र चढ़ाया। हल्द्वानी की गार्गी/गौला नदी में उक्रांद कार्यकर्ताओं ने अर्घ्य देने के साथ ही सरकार के खिलाफ आक्रोश व्यक्त किया कि वह प्रेमचन्द को अवसर दे रही है। देहरादून में उक्रांद के आह्वान पर तुलाराम चौराहे से रैली निकालते हुए मुख्यमंत्री आवास को घेरते हुए लोगों ने मंत्री को बर्खास्त करने की मांग की गई। मामला गरमाता देख सीएम पुष्कर सिंह धामी ने कमान संभाली और कहा कि पहाड़-मैदान का झगड़ा न करते हुए उत्तराखण्ड को संवारने में ध्यान दिया जाए। मंत्री प्रेमचन्द को लेकर बढ़ते जा रहे रोष को देखते हुए सीएम धामी ने फिर से दोहराया कि उत्तराखण्ड की अस्मिता से खिलवाड़ करने वाले बख्शे नहीं जाएंगे। जबकि प्रेमचन्द के दबदबे का अंदाज इसी बात से लगाया जा सकता है कि वह किसी न किसी तरह सोशल मीडिया में आकर अपनी बात कर रहे हैं। हालांकि अपने द्वारा की गई टिप्पणी पर वह माफी भी मांग चुके हैं। फिर भी उनके तेवर और पुराना इतिहास देखते हुए जतना बेहद नाराज है। लगातार उनके इस्तीफे की मांग की जा रही है। उत्तराखण्ड क्रान्ति दल के शीर्ष नेता काशी सिंह ऐरी ने कहा है कि प्रेमचन्द जिस प्रकार की भाषा का प्रयाग कर रहे हैं उससे पता चलता है कि उनके पर्वतीय प्रदेश और जन को लेकर कैसे भाव व विचार हैं। श्री ऐरी ने कहा कि इस हठधर्मिता के खिलाफ एक लड़ाई और लड़ी जाएगी। कहा कि राज्य विरोधी मानसिकता वाले लोगों को राज्य से बाहर करें। दुर्भाग्यपूर्ण है कि राज्य बने 25 साल हो गए हैं और हमारे जनप्रतिनिधियों, मंत्रियों की मानसिकता ही पहाड़ मैदान तक सीमित हो गई है। यह राज्य पहाड़ मैदान के लिये नहीं बनाया गया था बल्कि एक अलग भौगोलिक इकाई के रूप में बनाया गया था।

संसदीय कार्यमंत्री प्रेमचन्द खिलाफ सबसे पहले रोष में बोलने वाले विधायक लखपत बुटोला ने कहा कि हम अपने और अपने पहाड़ के खिलाफ चुप नहीं बैठेंगे। जिस प्रकार की भाषा का प्रयोग मंत्री ने सदन में किया है वह उत्तराखण्ड राज्य आन्दोलनकारियों व शहीदों का अपमान है। कहा कि राज्य की अवधारणा के विपरीत कार्य हो रहे हैं और पहाड़ के दूरस्थ क्षेत्रों से आने वाले विधायकों के साथ भेदभाव होता है। विधायक बुटोला ने कहा कि उत्तराखण्ड की पहचान हैं यहाँ के पहाड़। कहा यूपी से अलग होने की वहज सिर्फ भौगोकि परिस्थितियां और यहाँ की समस्याओं का समाधान था लेकिन आज सदन के अन्दर पहाड़ के स्वाभिमान को ललकारने का काम किया जा रहा है। पहाड़ पूर्व मुख्यमंत्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत ने जिस प्रकार से दो टूक कहा वह भाजपा के पाले से पहले बड़े नेता इस मामले में रहे। उन्होंने कहा कि पद की गरिमा के अनुरूप वक्तव्य देना चाहिये। भेदभाव की बात करते हुए असंयत बोलना किसी भी मंत्री को शोभा नहीं देता।

धारचूला विधानसभा के तेज-तर्रार विधायक हरीश धामी को तब गुस्सा आया जब पुरानी वीडियो को तोड़ मनोड़ कर सोशल मीडिया में उछाला गया। उन्होंने कहा कि इस बार तो छोड़ दिया, यदि फिर से गलती की तो छोड़ेंगे नहीं। सदन में ही क्या हाल करते हैं वह समय बतायेगा। श्री धामी ने कहा कि पर्वतीय होने के नाते वह पहाड़ से प्रेम करते हैं और यहाँ की संस्कृति पर हमला बर्दाश्त नहीं किया जायेगा। नेता प्रतिपक्ष करन माहरा ने कहा कि प्रेमचन्द अग्रवाल द्वारा जिस प्रकार का कृत्य किया गया है वह माफी लायक नहीं हैं। पूर्व मुख्यमंत्री हरीश रावत ने खुलकर कहा है कि एक जिम्मेदार व्यक्ति इतना कलुसित कैसे हो सकता है। प्रेमचन्द ने जिस तरह का व्यवहार और भाषा का प्रयोग किया है वह गरिमा के खिलाफ है। श्री रावत ने कहा कि मंत्री प्रेमचन्द का बयान उत्तराखण्ड विरोधी है। इससे राज्य की मूल भावना पर चोट हुई है।

युवा नेता मोहित डिमरी ने आक्रोश जताते हुए कहा कि स्वाभिमान से कोई समझौता नहीं हो सकता। इन मंत्री द्वारा लगातार इस प्रकार के कृत्य प्रदेश में विष घोला जा रहा है। पहले भी ऋषिकेश में इनके द्वारा मारपीट का मामला है। अन्य मामले भी सबकी नज़रों में हैं। यह लोग प्रदेश की तरक्की की बजाय अपने निजी स्वार्थों में लिप्त हैं और आम जनता को गुमराह करते रहे हैं।

वर्तमान के हालातों पर नरेन्द्र सिंह नेगी ने कटाक्ष करते हुए होली का गीत रचा जो खूब प्रचारित हुआ है- 'मत मारो प्रेम लाला पिचकारी, इस पिचकारी में चिंगारी.....।' दूसरी ओर प्रेमचन्द पूरी होली भर खूब थिरकते रहे। उनका अनुमान था कि आन्दोलनों की धरती उत्तराखण्ड में एकदम से कुछ नहीं होने वाला है। दूसरी ओर उनके खिलाफ उठ रहा धुंआ कईयों की कलई खोल चुका। राजनीति के रंग में रंगने वाले कब किस प्रकार से अपनी बात रखते हैं यह सब जनता समझ रही थी। जनता का बिदकना और 2027 के विधानसभा चुनाव को देखते हुए भाजपा सरकार और संगठन ने जो फैसला लिया उसके बाद सीएम से मिलने पहुँचे प्रेमचन्द ने फफकते हुए अपना त्यागपत्र सौंप दिया। सरकारी की ओर से इसके बाद की रणनीति गुपचुप है और तय है कि मार्च का महीना फेदबदल वाला होगा।

महेन्द्र भट्ट को लेकर भारी आक्रोश फैला

कबीना मंत्री प्रेमचन्द के बयान पर से उठे सियासी तूफान में भाजपा अध्यक्ष महेन्द्र भट्ट पर भी निशाना है। आन्दोलनकारियों को सड़क छाप कहने जैसे बयान देने वाले महेन्द्र भट्ट ने जिस प्रकार से लगातार बातें दोहराई है उससे भाजपा में भी सुलग-झुलस के अलावा उनके गृहक्षेत्र से लेकर सभी जगह लोगों में रोष है।

ऋतु खंडूरी पर निशाना

मंत्री प्रेमचन्द मामले में विधानसभा स्पीकर ऋतु खण्डूरी को लेकर भी आक्रोश उपजा है। सदन में उनके द्वारा मंत्री के प्रति नरमी दिखाने का आरोप लगात हुए नारेबाजी की है। कोटद्वार में श्रीमती खण्डूरी का विरोध करने के लिये प्रदर्शन कारियों ने सड़क पर नारेबाजी की काफिले पर गुस्सा कर रहे लोगों को पुलिस द्वारा हटाया गया।

दिल्ली में भी......

प्रथम पृष्ठ का शेष

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष महेन्द्र भट्ट के खिलाफ भी आन्दोलनकारियों में गुस्सा दिखाई दिया।

प्रवासी उत्तराखण्डियों ने राजघाट पर प्रदर्शनकारियों ने पुलता दहन करते हुए मंत्री के इस्तीफे की मांग की। यहाँ लोगों ने गिरफ्तारी भी दी।

कपूर इण्टरप्राईजेज
निकट मंगलम बैंकट हॉल, देवलचौड़
रामपुर रोड, कैंची धाम मार्ग हल्द्वानी
9997712279 9837824462

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

इतिहास

महान दानवीर जसुली दत्ताल शौक्याणी

जीवन सिंह दुग्ताल

कुमाऊँ के तिब्बत सीमा में स्थित दारमा व व्यास घाटी का यहाँ के इतिहास में बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। 'दारमा घाटी' आज पंचाचूली (न्युला) की सुन्दर चोटियों, चर्ख्या स्या के राजवंशो की अनगिनत कथाओं तथा सीपू में स्थित शिव गुफा के कारण सर्वविदित है। वहीं व्यास घाटी पर्वत शिखर, छोटा कैलाश तथा मानसरोवर यात्रा के कई पड़ाव के कारण शिव विख्यात है। प्राचीनकाल में दारमा घाटी में निवास करने वाले गाँववासियो का मुख्य व्यवसाय ही तिब्बत से व्यापार व् कृषि कार्य के अलावा ऊनी कारोबार ही था।

प्राचीनकाल में दारमा घाटी अति दुर्गम स्थान होने के कारण वहाँ तक पहुँचना बहुत कठिन था, प्राकृतिक सुन्दरता से परिपूर्ण यह अति सुन्दर दारमा घाटी कतिपय ऐतिहासिक कथाओं से भरपूर है। आज भी दारमा की महान दानवीर स्व. श्रीमती जसुली दताल शोक्याणी का नाम सभी जानकार इतिहाकार, कथाकार बड़े ही सम्मान के साथ लेते हैं। 18 वीं शातावादी की महान नारी स्व. श्रीमती जसुली देवी दताल की जन्म भूमि व कर्म भूमि दारमा वेली में दंग्तो (दातू) गाँव रहा है। जो कि पंचाचूली पर्वत शिखर के तलहटी में स्थित है। दारमा घाटी में यह गाँव दातु (दंग्तो) का ऐतिहासिक एवं धार्मिक दृष्टीकोण से प्राचीन काल

से ही बहुत महत्वपूर्ण व् पवित्र स्थल माना गया है। जसुली दताल (लला) ने भी इसी पवित्र देव भूमि में जन्म लेकर अपने नाम से 300 से अधिक धर्मशालाएं कुमाऊँ, गढवाल, नेपाल के महेन्द्र नगर, बैतड़ी जिलों के अलावा तिब्बत में भी लोकहितार्थ माननीय तत्कालीन अंग्रेज कुमाऊँ कमिश्नरी हेनरी रेमजे के कर कमलों द्वारा निर्माण करवाया गया था जो कि अभी भी एक मिशाल है। इसमें कई धर्मशालाएं तो अभी भी सही हालत में है। इतिहासकारो के अनुसार यह धर्मशालाएं मुगलों की 'सराय' शैली में बनायी गयी थी, इसमें पीने के पानी वगैरह का भी समुचित प्रबन्ध होता था। इसी लोकहितार्थ कार्य से जसुली लला का सर्वत्र अच्छा खासा नाम और सम्मान दिया गया है। जिससे चलते यह दानवीर महान स्वर्गीय जसुली लला (अम्मा) से जसुली बूढ़ी और जसुली शोक्याणी जैसे नाम से विख्यात हुई और वर्तमान समय में पूरे उतराखण्ड की सात महत्वपूर्ण स्त्रियों में उनका नाम भी अंकित है।

ऐसा कहा जाता है कि यह महान दानवीर महिला श्रीमती जसुली देवी दताल अपने समय में दारमा घाटी की सबसे धनी महिला थी लेकिन भाग्य उनके साथ नहीं था। अकस्मात पति का निधन तथा कुछ समय उपरान्त इकलोता पुत्र का भी निधन, इस महान नारी पर दु:खों का पहाड़ ही टूट पड़ा था। निराश होकर अपने सारे धन को पंचाचूली (न्युला) से निकलने वाले न्युला गंगा में सारे धन को प्रवाहित करने का विचार किया था लेकिन भाग्यवस तत्कालीन कुमाऊँ कमिश्नर श्री हेनरी रेमजे जी का मुलाकात उसी गाँव में होना तथा उनके द्वारा दिया गया विचार कि इस धन का प्रयोग लोकहितार्थ कार्य में लगाने का उचित सलाह, जिसे महान दानी महिला को सही लगा। इस महान दानवीर ने अपने दु:खों को भुलाकर सारे धन को तत्कालीन कुमाऊँ कमिश्नर को देकर लोक हित का कार्य किया। आगे इसी धन से कुमाऊँ, गढ़वाल, नेपाल व् तिब्बत में कम्र धर्मशालाओ व पीने का नोलों का निर्माण कर लोक कल्याण का कार्य किया।

तत्कालीन समय में मोटर रोड नहीं होने के कारण सभी पथिकों ने इसी धर्मशालाओं का ही प्रयोग किया करते थे। आज भी कई धर्मशालाएं अल्मोड़ा रोड में भी देखने को मिल जाते है। जसुली दताल की इस बिखरती धरोहर धर्मशालाओ को पूर्व में भी कम्र सामाजिक कार्यकर्ताओ द्वारा जीवित रखने व उचित रखरखाव के लिए भरसक प्रयास किया गया था। जो कि त्याग, बलिदान की कहानी इतिहास के पन्नो में मौजूद है। आगे इस विषय में आज भी कई सेमीनार व नि:स्वार्थ भावना से इन बिखरती खण्डहर धर्मशालाओं को ठीक करने के लिए उत्तराखण्ड सरकार द्वारा और साथ साथ रं कल्याण संस्था के कर्मठ कार्यकर्ताओं द्वारा भी समय समय पर प्रयास किया जा रहा है जो कि एक सराहनीय कदम और प्रशंसा के पात्र भी है।

दातु (दंग्तो) गाँव से मेरा भी विशेष लगाव रहा है क्योंकि यह प्राचीन ऐतिहासिक एवं पवित्र धार्मिक गाँव मेरा ममकोट भी रहा है जहाँ पर मेरा बचपन का कुछ समय बीता है। दुग्तू व दातु गाँव दारमा घाटी मे एक दूसरे से काफी नजदीक होने से माता जी के साथ हर समय आना-जाना होता था। इस गाँव के कतिपय किस्से कहानियाँ है जो कि बड़े ही दिलचस्प, रोमाचक व अद्भुत हैं। अक्सर बुजुर्गों से सुना करता था। जब भी इतिहास के पन्नो को पलटते हैं तो हमें यह भी ज्ञात होता है कि इसी पवित्र देव भूमि दंग्तो (दातू) में चर्ख्या ह्या के बंशज योग्लुरुजन द्वारा देवों के देव महादेव का शिव डमरू को तत्कालीन समय में साक्षात रूप से शर्तानुसार नो दिनों में निर्माण व दर्शन भी कराये थे। आज भी अम्म ऋचा (दारमा के काक पुराण वाचक) अपने कथा के दरमियान इस पवित्र शिव डमरू की चर्चा अपने कथाओं में करते हुए देखते है। इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि यह ऐतिहासिक स्थल प्राचीन काल से ही कितना पवित्र रहा होगा। तभी से इस पवित्र स्थल में दारमा के चौदह गाँववासी मिलकर सार्वजनिक रूप से गबला स्याग से (देवो के महादेव) की पूजा अर्चना किया करते थे।

आज इस पवित्र स्थल दंग्तो गाँव में पुन: महादेव मन्दिर तथा 'ह्या गबला देव' मन्दिर की स्थापना हो चुका है और पूजा अर्चना विधिपूर्वक बर्ष 1977 से हर वर्ष अगस्त माह में 18 से 22 अगस्त में किया जाता है। पूजा अर्चना, सांस्कृतिक झाँकियां, खेलकूद इस महोत्सव के खास विशेषताएं हैं लेकिन आधुनिक समय की महान दानवीर स्व. जसुली लला जी का गाँव दांतू (दंग्तो) में एक मूर्ति के अलावा ऐसा कोई ऐतिहासिक धरोहर/स्मारक देखने को नहीं मिलता है। मैंने कई बार इस विषय में जानकार लोगो से चर्चा भी किया कि काश इस पवित्र स्थल गाँव दातू में ऐसा कुछ यादगार लघु संग्रहालय बन जाता जो कि जसुली लला को महान श्रद्धांजलि हो सकता था परन्तु बात आगे नहीं बढ़ सकी। उम्मीद है भविष्य में इस विषय में सामाजिक कार्यकर्ता दातू गाँव वासी अवश्य ध्यान देंगे।

'पिघलता हिमालय' के माध्यम से महान दानवीर जसुली दताल के इतिहास को दोहराने का खास मकसद यही है कि इतने दुर्गम स्थान में रहने के बाबजूद तथा अपने अपार दु:खो को भुलाकर लोकहित के विषय में सोचना बहुत बड़ी बात है। हम सभी को इस तरह के लोकहितार्थ कार्य के विषय में भी चिन्तन मनन करना चाहिए। इस महान दानवीर महिला के द्वारा जो विषम स्थिति में लोककल्याण की भावना से जो महान कार्य किया उसी को ध्यान रखते हुए उत्तराखण्ड सरकार द्वारा तहसील धारचूला जिला पिथौरागढ़ के बालिका इण्टर कालेज का नामकरण ही जसुली दताल के नाम पर रखा गया है, जो कि इस दारमा घाटी की दानवीर जसुली दताल महान उपलब्धि को दर्शाता है। हम सभी को ऐसे ही महान लोकहितार्थ कार्य करने वाले महिला / पुरुष से भी सीख लेनी चाहिए।

मेरी खूबसूरती

मेरी खूबसूरती को प्रकृति ने
इस कदर सजाया है
चारों ओर हिमश्रृंखलाओं के बीच
हिमनगरी मुनस्यारी
घने जंगल, हरे-भरे घास का मैदान
बीच में गोरी गंगा जो बहाया है
मेरी खुबसूरती.....
भोर में सूरज की किरणें
चहचहाती यहाँ डाली में पंछी
चेहरे पर पड़ती ठंडी हवाओं के थपेड़े
धरती पर जन्नत यही बसाया है
मेरी खुबसूरती......
गोरी नदी के वार-पार
छोटे -बड़े मनमोहन गाँव
जैसे हरे-भरे बगीचों के बीच
स्फेद गुलाब का फूल खिलाया है
मेरी खुबसूरती....
चाँदनी रात के सफेद रंग में
सामने खड़ी पंचचूली हिमालय
ढलते सूरज ने लालिमा फैलाया
कोहरे ने भी चादर ओढ़ाकर
चार चाँद लगा दिया है
मेरी खुबसूरती......
बेटुलीधार से देखकर
अचम्भित रह जाते सब
अजब-गजब अद्भुत नजारों से
आधा संसार, आधा मुनस्यार
कहलाया हैं
मेरी खुबसूरती.......

-जगदीश बृजवाल

ज्योतिष की बातें- 221

29 मार्च 2025 को शनि कुम्भ राशि में पूर्व दिशा में उदय हो जाएगा अत: शनि से प्राप्त होने वाले शुभाशुभ फल सभी जातकों को अब स्पष्ट रूप से प्राप्त होंगे।

29 मार्च 2025 को शनि समराशि मीन में प्रवेश करेगा जो कि गुरु की राशि है अत: शनि में उग्रता कुछ कम रहेगी। दो वर्ष दो माह तक शनि मीन राशि में रहेगा इस दीर्घावधि में समय-समय पर विभिन्न ग्रहों से शनि की युति व विभिन्न ग्रहों की शनि पर दृष्टि होने से शनि के शुभाशुभ फलों में न्यूनता या अधिकता आती रहेगी। फलदीपिका के अनुसार शनि त्रिषडाय अर्थात् तीसरे, छठवें व ग्यारहवें भावों में शुभफल प्रदान करता है। साथ ही वृषभ व तुला राशि के लिए शनि योगकारक भी होता है अत: अगले दो वर्ष दो माह तक शनि नौकरी आदि अपने कारक विषयों में मकर, तुला व वृषभ राशि के जातकों को अत्यन्त शुभ फल प्रदान करेगा। मेष, मीन, कुम्भ, धनु व सिंह राशि के जातकों को शनि की साढ़ेसाती अथवा ढैय्या चलने के कारण मानसिक उलझन होगी। शेष राशियों वृश्चिक, कन्या, कर्क व मिथुन राशि के जातकों को शनि इस गोचर अवधि में शुभाशुभ फल अर्थात् मिश्रित फल प्रदान करेगा।

वर्ष प्रतिपदा- चैत्र शुक्ल प्रतिपदा उदयव्यापिनी तिथि तदनुसार रविवार 30 मार्च 2025 को 'सिद्धार्थी' नाम नवम्वंत्सर, विक्रमी 2082 प्रारम्भ होगा।

घट स्थापना- चैत्र शुक्ल प्रतिपदा प्रात: व्यापिनी व न्यूनतम एक मुहूर्त्ता तिथि में घट स्थापना होती है। तदनुसार रविवार 30 मार्च 2025 को घट स्थापना होगी और अगले नौ दिन दुर्गा जी का पूजन किया जाएगा।

शुभं भवतु !! **-ओंकार नाथ कोष्टा**
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद्

सम्यक् विचार- 112

अन्तरजातीय विवाह

आजकल अन्तरजातीय विवाह बहुत अधिक संख्या में हो रहे हैं। लड़के लड़कियाँ प्रेम प्रकरण में पड़ जाने के कारण अन्तरजातीय विवाह कर लेते हैं। कई बार अपनी ही जाति में योग्य रिश्ता न मिल पाने के कारण भी अन्तरजातीय विवाह लोग स्वीकार कर लेते हैं। मेरे अनुमान से लगभग 50 प्रतिशत अन्तरजातीय विवाह अब होने लगे हैं। इससे आगे चलकर क्या समस्याएं होंगी, इस पर किसी ने विचार नहीं किया।

शास्त्रों में चौरासी लाख योनियों के अन्तर्गत चार लाख योनियाँ मनुष्यों की बताई गई हैं। सभी जातियों के मूल स्वभाव और गुण भिन्न-भिन्न होते हैं। ये प्राकृतिक गुण पीढ़ी दर पीढ़ी जातियों में बने रहते हैं वे कभी नष्ट नहीं होते हैं। ब्राह्मण आदि चार वर्णों के भी स्वभाव गुण आदि भिन्न-भिन्न ही होते हैं। ब्राह्मणों में सामान्यतया जो धैर्य, क्षमाशीलता का भाव होता है वह क्षत्रियों में नहीं पाया जाता, आदि आदि। अन्तरजातीय विवाह होने से अब धीरे-धीरे विभिन्न जातियों के स्वाभाविक गुण समाप्त होते जा रहे हैं। उदाहरण के रूप में लड़का-लड़की में एक सुनार और एक हलवाई जाति का है तो उनकी सन्तान में न तो हलवाई के और न ही सुनार के स्वाभाविक गुण रह पाते हैं। इसी को शास्त्रों में वर्णसंकरता कहा गया है।

एक विशेष बात और होती है कि अन्तरजातीय विवाह होने पर उनकी सन्तानों की संख्या अधिकतम एक ही होती है अथवा सन्तान होती ही नहीं हैं। इस बात का कोई लिखित प्रमाण नहीं है फिर भी व्यवहारिक रूप से समाज में देखा जा सकता है। अत: मेरे विचार से अन्तरजातीय विवाहों के भयंकर परिणामों के कारण अपनी ही जाति में विवाह करना चाहिए ।

-ओंकार नाथ कोष्टा

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

रुद्रपुर में बेहड़-शुक्ला ने एक-दूसरे के खिलाफ खोला मोर्चा, प्रदर्शन

रुद्रपुर। विधायक तिलकराज बेहड़ और पूर्व विधायक राजेश शुक्ला के बीच मची द्वन्द बढ़ता जा रहा है। होली से पहले और होली के बाद भी एक-दूसरे के खिलाफ मोर्चा खोलते हुए दोनों नेताओं ने अपने समर्थकों के साथ जबर्दस्त प्रदर्शन किया है। असल में इस पूरी लड़ाई के पीछे अपने दबदबे को कायम रखने का खेल है। इस मोर्चाबाजी में कार्यकर्ता पार्टी का रंग चढ़ाकर जोश में दिखाई दे रहे हैं।

पहले रुद्रपुर और अब किच्छा विस के विधायक बेहड़ के आह्वान पर कोतवाल को हटाने का मुद्दा लेकर धरना प्रदर्शन किया गया। दूसरी ओर रुद्रपुर विस के पूर्व विधायक राजेश शुक्ला ने बेहड़ पर भू माफियाओं को संरक्षण देने और पुलिस प्रशासनिक अधिकारियों पर दबाव बनाने का आरोप लगाते हुए धरना प्रदर्शन किया।

इस पूरी लड़ाई में लगातार तमाम मामलों को लेकर दोनों पक्ष भिड़ रहे हैं और एक-दूसरे की पोल खोल रहे हैं। आम जनता चाहती है कि जो भी गलत है उस पर कार्रवाई हो।

हल्द्वानी-मुनस्यारी केमू बस से राहत

हल्द्वानी। यात्रियों की सुविधा के लिये कुमाऊँ मोटर ओनर्स ने हल्द्वानी से मुनस्यारी के लिये बस संचालन शुरू कर दिया है। 640 रुपये प्रति सवारी और नियमित बस संचालन से यात्रियों को काफी राहत मिलेगी। दूरस्थ क्षेत्रों के लिये केमू का इस प्रकार संचालन शुरू से ही जनता की पसंद रहा है।

धारचूला में विश्राम गृह व स्मारक बने

धारचूला। गौरव कल्याणी सेनानी समिति ने मुख्यमंत्री से तहसील धारचूला में पूर्व सैनिक विश्राम गृह और बलिदानी स्मारक बनाने की मांग की है। ज्ञापन में कहा है कि धारचूला मुनस्यारी में बलिदानी सैनिकों की संख्या 137 है। हजारों की संख्या में पूर्व सैनिक और वीर नारियां हैं परन्तु स्मारक और विश्राम गृह नहीं है।

केदारनाथ व हेमकुंड रोपवे को मंजूरी

नई दिल्ली। केन्द्र सरकार ने उत्तराखण्ड में दो रोपवे परियोजनाओं को मंजूरी दी है। इनमें सोनप्रयाग से केदारनाथ और गोविन्दघाट से हेमकुण्ड रोपवे परियोजनाएं शामिल हैं। इन दोनों परियोजनाओं में कुल 6.811 करोड़ रुपये की लागत आएगी।

बंगापानी में बनेगा पीएचसी

मुनस्यारी। गोरीछाल क्षेत्र के लोगों के लिये स्वास्थ्य सुविधा बढ़ाने के लिए बंगापानी में पीएचसी बनाने की स्वीकृति हो चुकी है। मवानी-दवानी में दस नाली भूमि पर राजकीय प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के निर्माण के लिये विभाग ने भूमि का चयन कर वित्तीय स्वीकृति को लेकर प्रस्ताव शासन को भेजा है। वर्तमान में यहाँ ऐलोपैथिक अस्पताल नहीं होने से क्षेत्रवासियों को बाहर जाना पड़ता है।

पन्तनगर में अ.भा. किसान मेला

हल्द्वानी। जीबी पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में 17वां अखिल भारतीय किसान मेला हुआ। इसके मुख्य अतिथि पूर्व राज्यपाल व पूर्व मुख्यमंत्री भगत सिंह कोश्यारी ने का कि यह कृषि मेला वैज्ञानिकों के शोधों और कार्य को किसानों तक पहुँचाने का बड़ा माध्यम है। वैज्ञानिकों का किसानों से सम्वाद ही कृषि क्षेत्र को समृद्ध करेगा। मौके पर कुलपति डॉ.मन मोहन सिंह चौहान, विवि का स्टाफ व किसान व छात्र मौजूद थे।

बनभूलपुरा हिंसा आरोपियों राहत नहीं

नैनीताल। हाईकोर्ट ने बनभूलपुरा हिंसा में शामिल कई आरोपियों की जमानत याचिकाओं पर एकसाथ सुनवाई के बाद फिलहाल कोई राहत नहीं दी है। न्यायमूर्ति मनोज कुमार तिवारी, पंकज पुरोहित की खण्डपीठ ने आपत्ति दाखिल का निर्देश कर अगली तिथि नियत की।

पूर्णागिरी मेले की रौनक बनी हुई है

उद्घाटन अवसर पर मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने कहा कि मेले को वर्षभर चलाने का प्रयास है जारी

टनकपुर। उत्तर भारत के बड़े मेलों की गिनती में आने वाला पूर्णागिरी मेले की इन दिनों रौनक है। होली के अगले दिन शुरू होने वाले इस मेले में पहले ही दिन पचास हजार से ज्यादा श्रद्धालुओं ने पूर्णागिरी के दर्शन किये। तब से यह सिलसिला लगातार जारी है।

उद्घाटन मौके पर भारी संख्या में श्रद्धालु दर्शन के लिये पहुँचे। अक्सर होली पर्व के बाद खासकर उत्तर प्रदेश के विभिन्न स्थानों से भारी संख्या में श्रद्धालुओं का सैलाब यहाँ उमड़ता है। श्रद्धालु ट्रेन, परिवहन निगम की बसों, चार्टर बसों, निजी वाहनों में लगातार आ रहे हैं। मेला शुरू होते ही जिला पंचायत, टनकपुर नगर पालिका के साथ बनबसा जिला पंचायत ने भी मेला क्षेत्र में व्यवस्थाएं शुरू कर दी हैं। माँ पूर्णागिरी धाम के दर्शन के बाद इस समय नेपाल के महेन्द्र नगर और ब्रह्मदेव मण्डी स्थित सिद्धनाथ मन्दिर में श्रद्धालुओं के पहुँचने का सिलसिला बना हुआ है। इस बार सरकारी तौर पर पूर्णागिरी मेला 15 जून तक संचालित होगा।

मेले का उद्घाटन करने लिये मुख्य मंत्री पुष्कर सिंह धामी पधारे और उन्होंने घोषणा की है कि पूर्णागिरी धाम के आस पास स्थित सभी प्रमुख धार्मिक एवं पर्यटन स्थलों को जोड़कर विशेष पर्यटन सर्किट विकसित किया जायेगा। इस पहल का उद्देश्य न केवल माँ पूर्णागिरी धाम की यात्रा को और सुविधाजनक बनाना है बल्कि पूरे चम्पावत जिले में पर्यटन को नया आयाम देना भी है। मुख्यमंत्री ने कहा कि इस सर्किट के निर्माण से श्रद्धालुओं और पर्यटकों को साल भर आकर्षित किया जाएगा, जिससे चम्पावत को धार्मिक और साहसिक पर्यटन के प्रमुख केन्द्र के रूप में विकसित किया जा सके। यह परियोजना मेले को 12 महीने संचालित करने के संकल्प और लक्ष्य के अनुरूप है और इससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलेगा।

अलकनंदा व पिंडर के अवरोधों की खोज

देहरादून। माणा में हिमस्खलन के बड़ी घटना के बाद सरकार ने गंगा की प्रमुख सहायक नदियों अलकनन्दा और पिण्डर नदी के सम्भावित अवरोधों की खोज कराने का निर्णय लिया है। इसके लिये दोनों नदियों के उच्च क्षेत्र में सर्वेक्षण कराया जायेगा।

सचिव (आपदा प्रबन्धन) विनोद कुमार सुमन ने जीएसआई के उप महा निदेशक, वाडिया हिमालय भू विज्ञान संस्थान और आईआईआरएस के निदेशक को इसके लिये पत्र लिखा है। सर्वेक्षण कार्य में लोनिवि और सिंचाई विभाग भी शामिल होंगे।

बताया गया है कि दोनों नदियों के ऊँचाई वाले स्थानों में तीन तरह से सर्वे कराने की अपेक्षा की है। नदियों में अवरोध स्थलों की पहचान के लिये हाई नेच्युरलेशन सेटेलाइट तस्वीरों का उपयोग होगा। फील्ड सर्वे और सभी टीमों द्वारा स्थलीय निरीक्षण किया जायेगा। तीसरा हवाई सर्वेक्षण किया जा सकता है। हेलिकाप्टर की व्यवस्था के लिये आपदा प्रबन्धन विभाग की ओर से तैयारी होगी। माणा में 28 फरवरी को हुए हादसे के बाद से यह सर्वे जरूरी समझा गया है।

नारायण आश्रम से जयकोट सड़क हो

धारचूला। रं कल्याण संस्था के सदस्यों ने चौदास घाटी के सुप्रसिद्ध नारायण आश्रम से नियांग, पस्ती होते हुए जयकोट तक मोटर मार्ग बनाने के लिये डीएम को सम्बोधित ज्ञापन एसडीएम मंजीत सिंह को सौंपा।

ज्ञापन में कहा गया है कि नारायण आश्रम तक सड़क बने 35 साल से अधिक हो गए हैं। आश्रम से लगे हुए गाँव आज भी सड़क सुविधा से वंचित हैं। पस्ती से नीचे जयकोट तक भी सड़क पहुँच चुकी है। यदि नियांग, पस्ती भी सड़क से जुड़ जाएंगे तो नारायण आश्रम से पांगला, गस्कू राष्ट्रीय राजमार्ग तक लिंक मोटर मार्ग बन जाएगा। सड़क बनने से क्षेत्रवासियों को सुविधा होगी। ज्ञापन देने वालों में संस्था के महासचिव महेन्द्र सिंह ह्यांकी, पूर्व चैयरमैन अशोक नबियाल, दीपक रौंकली, यूथ फोरम अध्यक्ष खुशाल गर्खाल, दौलत सिंह फकलियाल आदि थे।

एसएसजे विवि में तालाबंदी, प्रदर्शन

अल्मोड़ा। सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय के प्रशासनिक भवन पर छात्र नेताओं ने तालाबन्दी करते हुए प्रदर्शन किया। उनका कहना है कि जल्द ही छात्रों की मांगों का निदान किया जाए।

विवि का पुतला फूंकते हुए प्रदर्शनकारियों ने कहा कि विवि और एक कम्पनी के बीच लम्बे समय से से विवाद चल रहा है। इसका खामियाजा छात्रों को भुगतना पड़ रहा है। कई छात्रों की अंकतालिकाओं में गड़बड़ियां हैं। नौकरी में जाने व अन्य जगहों में प्रवेश लेने के लिए भी छात्रों को परेशानी से जूझना पड़ रहा है। निवर्तमान छात्र संघ अध्यक्ष राहुल धामी ने कहा कि छात्र-छात्राएं अपनी समस्या के निदान के लिए विश्वविद्यालय में पहुँचते हैं लेकिन उनकी समस्या को सुनने के लिये काई भी अधिकारी मौजूद नहीं है। अपना परीक्षाफल सुधार के लिये छात्र-छात्राओं को परेशान होना पड़ रहा है यह शर्म की बात है। प्रदर्शनकारियों में भूपेन्द्र कोरंगा, पियूष पाण्डे, सूरज मिहिर, राजकमल जोशी, विनीत सिंह मेहरा, रोशन बिष्ट आदि थे।

भाजपा सरकार के तीन साल पूरे होते ही सियासी हलचल, चुनाव तैयारी

देहरादून। धामी सरकार के तीन साल पूरे होते ही सियासी हलचल शुरू हो चुकी है। साथ ही चुनाव तैयारी को लेकर संगठन की रणनीति बनने लगी है। संगठन में प्रदेश अध्यक्ष का नये चेहरे के साथ ही प्रशासनिक फेरबदल भी होना है। प्रशासन में मुख्य सचिव राधा रतूड़ी का कार्यकाल पूरा होने पर नए मुख्य सचिव दिखाई देंगे।

माना जा रहा है कि संगठन में बदलाव के साथ-साथ 2027 के विस चुनाव को देखते हुए अभी से रणनीति के अनुसार काम होने लगेगा।

मूल निवासी की मांग पर दंडवत यात्रा

रुद्रप्रयाग। उत्तराखण्ड के पर्यावरण की सुरक्षा सहित गाय को राष्ट्र माता घोषित करने, मूल निवास जैसे मुद्दों को लेकर सबधारखाल से केदारनाथ धाम के लिये सष्टांग दंडवत यात्रा लक्ष्मण सिंह बुटोला ने शुरू कर दी है।

परिक्रमा

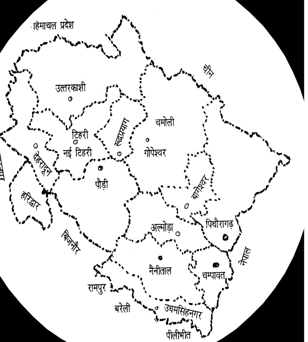

ईडी के अधिकारी की जाँच हो : पंवार

देहरादून। नगव गठित उत्तराखण्ड स्वाभिमान मोर्चा के अध्यक्ष बॉबी पंवार ने प्रेस वार्ता में अपर निदेशक स्वजल परियोजना सुजीत कुमार विकास पर भ्रष्टाचार के गम्भीर आरोप लगाते हुए जाँच की मांग की है। आरोप लगाया है कि इन अधिकारी ने सौ करोड़ से ज्यादा की सम्पत्ति अर्जित कर ली है।

दून मेडिकल कालेज में तैनाती

देहरादूनं स्वास्थ्य सुविधाओं को बेहतर करने के लिये दून मेडिकल कालेज चिकित्सालय में तमाम चिकित्सा व्यवस्था को विस्तार दिया जा रहा है। मंत्री धन सिंह रावत ने कालेज में आधा दर्जन से अधिक चिकित्सा सुविधाओं का शुभारम्भ किया। उसमें लेजर सर्जरी, नेक्स्ट जनरेशन ई-हॉस्पिटल, ओपीडी हेल्प डेस्क, कलर डॉपलर अल्ट्रासाउंड लेवल-2, ब्लड सेम्पलिंग और रिपोटिंग काउंटर शामिल है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

दिल से पिघलता हिमालय से मेरी पहली मुलाकात

नारायण सिंह धर्मशक्तू

चिट्ठी आई है वतन से चिट्ठी आई है. ...। चार-छः जवाहर नवोदय विद्यालय सुयालबाड़ी, नैनीताल के बच्चे समवेत स्वरों में गाकर सरकार द्वारा आवंटित क्वाटर से बाहर मुझे समाचार पत्र पिघलता हिमालय देने के लिए खड़े थे। मैंने पूछा कि तुम आज पंकज उदास की गज़ल क्यों गा रहे हो? बच्चों ने कहा कि सर आपको आपकी वतन की चिट्ठी आई है। मैं आश्चर्यचकित था मेरी चिट्ठी!! तब बच्चों ने पिघलता हिमालय दिखाते हुए कि सर आप इसे चिट्ठी ही तो कहते हैं। ये चिट्ठी ही हमें गाँव गोठार, मेले ठेले, बांज बुरांश, सुख-दुःख, तीज त्यौहारों की खबरें/निमंत्रण लेकर आती हैं। तब मुझे याद आया कि एक दिन मैं अपने वार्डन रूम के बाहर पिघलता हिमालय पढ़ रहा था कि बच्चों ने पूछा कि सर आप कौन सा समाचार पत्र पढ़ रहे हो तो मैंने प्रत्युत्तर में कहा अपने वार्डन रूम के बाहर पिघलता हिमालय पढ़ रहा था कि बच्चों ने पूछा कि सर आप कौन सा समाचार-पत्र पढ़ रहे हो तो प्रत्युत्तर मैने चिट्ठी-पाती कहा। और बताया कि यह हिमालय की आवाज है, यह सीमान्त लोगों की सांसें है। तब से मेरे स्कूल के बच्चे भी कहने लगे कि सर हम भी चिट्ठी-पाती पढ़ेंगे। मैने बताया यह एक साप्ताहिक समाचार पत्र है जो सप्ताह में नियमित रूप से पोस्टआफिस से आता है पहले आप लोग पढ़ लेना फिर मेरे पास भिजवा देना। मुझे भी तो पढ़ना है! तब से बच्चे हर सप्ताह चिट्ठी के इंतजार में रहते हैं। जैसे ही पोस्टमैन विद्यालय में डाक देने पहुँचता है तब विद्यालय के छात्र पिघलता हिमालय के लिए दौड़ लगाते है वैसे भी छात्र जो घर से दूर हॉस्टल में रहकर पढ़ाई करते हैं वे सब अपने आसपास गाँव घरकी आदिल कुशल जानने के लिए बेताब होते हैं। आज के सोशल मीडिया के दौर में भी पिघलता हिमालय अपनी पाती द्वारा लोगों को अपनेपन की भावों से जोड़े रखने के प्रयासों की बच्चे खूब सराहना करते हैं। वेदांग ढौंढियाल जो कक्षा 11वीं का छात्र है पिघलता हिमालय के बारे में विचार देते हुए बताता कि यह समाचार पत्र नहीं हमारे संस्कृत की संवाहिका है। प्रणव कुमार कक्षा 11वीं छात्र को झकरुवा भूली के फ़सक बहुत पसन्द है।

कक्षा 9 वीं के छात्र श्रेष्ठ सिंह को हमारे संरक्षक/ बुजुर्ग पर आलेख बहुत पसन्द है।

तन्मय ध्यानी कक्षा 10 वीं के छात्र को हमारी संस्कृति विरासत फीचर/प्रसंग बहुत भाता है।

कक्षा 9 वीं के छात्र यशपाल पर्यटन स्थलों की जानकारी से सम्बन्धित लेख पढ़ने के लिए उत्सुक रहता है।

विनय कुमार को हमारे प्राकृतिक संसाधनों की उपेक्षा पर प्रसंग रुचिकर व ज्ञानवर्धक लगता है।

कक्षा 12 के छात्र मोहित सती पिघलता हिमालय की मुहिम हमारी संस्कृति हमारी विरासत संरक्षण के लिए धन्यवाद ज्ञापित करता है।

विद्यालय के छात्र गौरव को ज्वलंत विषयों पर दाज्यु की लेखनी बहुत पसन्द है।

इन बच्चों के बाइट्स सुनकर/जानकार मैं सहसा अपने अतीत में खो गया। मैं भी सन् 1987/88 में इन्हीं बच्चों की तरह राजकीय इण्टर कालेज मुनस्यारी का छात्र था, मैं गाँव से दूर मुनस्यारी के एक धुएंवाली एक छोटी सी कोठरी किराए पर रहकर पढ़ाई करता था। जिसका मासिक किराया 10 रुपए था। मुनस्यारी बाजार में सबसे कम किराए का यही कमरा था। घर की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। मुनस्यारी बाजार मेरे लिए कनॉटप्लेस से कम नहीं था। जिस कमरे में रहता था उसके नीचे होटल था। जिसमें जलेबी, बालूशाही, समोसे अरजी व भुटुवा बनता था। सुबह बांज बुरांश की गीली लकड़ी से चीची आवाज व धुएं से कमरा रहने योग्य नहीं रहता था। पर क्या किया जाए इससे अधिक सुविधा वाले कमरे का किराया देना सामर्थ्य में नहीं था। सोमवार से शनिवार तक स्कूल, दोस्तों के डेरे में समय व्यतीत होता पर रविवार को अपने कमरे के आसपास बैठा करता। मेरे डेरे के पास देव सिंह पाना जी की चाय की टपरी थी। दुकानदार रविवार को सुबह की धूप के साथ आनन्द लेते थे। मैं भी उन्हीं के आसपास बैठा रहता था एक दिन कुछ दुकानदार पिघलता हिमालय पर छपी खबरों के बारे में चर्चा कर रहे थे। कह रहे थे कि उप्रेती जी ने क्या बढ़िया लिखा है। वे सब पिघलता हिमालय पर छपी वर्ष वा साप्ताहिक खबरों पर विमर्श कर रहे थे। मैं भी पढ़ने के लिए उत्सुक था। पर मैं शर्मीले स्वभाव कारण उनसे जानकारी प्राप्त नहीं कर सका। सभी दुकानदार अपनी अपनी दुकानों में चले जाने के बाद बिन्द्रा (शु-मेकर) और मैं हम दोनों बैठे धूप सेक रहे थे। बिन्द्रा (शु-मेकर) पढ़ा लिखा था, दुनियादारी देखी थी। मैने पूछा यह पिघलता हिमालय पढ़ने को कहां मिलेगा? तो उसने बताया कि श्री आनन्द वल्लभ उप्रेती जी हल्द्वानी वाले और श्री दुर्गासिंह मर्तोलिया आपस में मिलजुलकर अखबार छपवाते हैं। और कहा यदि तुम श्री दुर्गासिंह जी से बात करो तो वे तुम्हें पढ़ने के लिए दे देंगे। वे भले और नेक इन्सान हैं। उस दौर में अमर-उजाला तीसरे चौथे दिन मुनस्यारी पहुँचता था। उस पर भी कुछ सम्भ्रान्त लोग ही पढ़ पाते थे। साथ ही सोरघाटी प्रिन्टिंग प्रेस से छपने वाली पर्वत-पीयूष साप्ताहिक समाचार पत्र आता था। जिसमें कुछ अभिजात्य वर्ग का ही कब्जा था। जो मुझे बात में पता चला। श्री दुर्गा सिंह मर्तोलिया जी बहुत सहृदय, विनोदप्रिय, मिलनसार व्यक्तित्व के धनी थे। सबसे मिलजुल कर रहते थे। जनप्रिय थे इसलिए लोग उन्हें नेता जी कहते थे। शायद शनिवार का दिन था। कोई सार्वजनिक अवकाश के कारण आज बाजार मेंखास चहल-पहल नहीं थीं। मैने देखा एक सामान्य कद-काठी, पर हिमालय जैसे धीर गम्भीर, घनी मूंछें, गोल चेहर, हरे रंग की पारका जैकेट पहने श्री दुर्गासिंह मर्तोलिया जी अपनी दुकान के आगे लोहे की एक फोल्डिंग कुर्सी में बैठकर पिघलता हिमालय पढ़ रहे थे। मुझे प्रथम बार दूर से पिघलता हिमालय समाचार पत्र और संस्थापक सम्पादक के दर्शन हुए। मैंने इससे पहले कोई क्षेत्रीय, सांस्कृतिक मुद्दों पर छपने वाली समाचार पत्र नहीं पढ़ा था। मैने हिम्मत जुटाई और मर्तोलिया जी के पास उनके दुकान में पहुँचा। उन्होंने एक ग्राहक समझकर पूछा क्या चाहिए। मैने कहा समान तो कुछ नहीं चाहिए, पर मैं पिघलता हिमालय पढ़ना चाहता हूँ। तो वे मुस्कुराते हुए बोले यह कल ही डाक से मिली है। आज मैं पढ़ लेता हूँ कल सुबह दुकान खुलने पर आना। तब लेकर पढ़ लेना। जी कहकर मैं वापस लौट आया। दिन किसी तरह बीत गया, रातभर उत्सुकता में नीद नहीं आई। आज रविवार था, मैं सुबह से ही दुकान खुलने का इंतजार में था। आज कमरे में धुंआ अत्यधिक था। इस लिए बाहर एक लकड़ी के बैंच में बैठा उनकी राह देख रहा था। सुबह दोनों भाई दुकान में पहुँच गए थे। तब उनकी दो दुकानें थी। एक किराना दूसरा रेडिमेड जनरल स्टोर था। छोटे भाई मंगल सिंह मर्तोलिया जी ज्यादातर किराना संभालते थे श्री दुर्गासिंह जी दोनों में बैठते थे। दूसरे दिन मैं हिम्मत करके अखबार मांगने गया। अरे! हाँ......कहते हुए मुस्कुराए, पहले मेरे बारे में जानकारी ली, कौन सी कक्षा मे पढ़ते हो तुम्हारा नाम क्या है? कहाँ के रहने वाले हो? मैने सबकुछ बताया बहुत खुश हुए। और कहने लगे कि एक गाँव का लड़का इतना पढ़ने के लिए लालायित है। मैं अखबार लेकर अपने कमरे में चला गया। होटल से धुंआ कम हो गया था। मैने अच्छी तरह देखा पलटाया और एक-एक खबर को पढ़ने लगा। उस दिन आकाश साफ था पंचाचूली की धवल श्वेत शिखरों से सूर्य की स्वर्णिम किरणें चमक रही थी। उस साप्ताहिक में भिटौली पर कहानी छपी हुई थी किस तरह एक भाई भिटौली के पर्व पर अपनी बहिन गौरीधाना मिलने जाता है। ननद और सास द्वारा कुचक्र रचना, एक अन्तहीन कहानी पढ़कर मेरे आँखों से अविरल अश्रुधारा बहने लगी। उस दिन मैं खूब रोया। यह था मेरे पिघलता हिमालय से प्रथम साक्षात्कार। मैने पढ़ने के बाद सही सलामत अखबार वापस कर दिया। मर्तोलिया जी बोले जब भी पढ़ने का मन हो मुझसे मांग लेना और पढ़ते रहना। फिर दो चार बार ही लिया होगा। वे अपने कार्यों में ही व्यस्त रहते थे। यदि वे आज होते और मैं ये प्रसंग सुनता तो उन्हें अच्छा लगता। पर वह विराट हिमालय समय से पूर्व पिघल गया उनसे पिघली अमृतधारा आज भी पिघलता हिमालय रूप में निरन्त प्रवाहित है।

-नारायण सिंह धर्मशक्तू
जवाहर नवोदय विद्यालय
सुयालबाड़ी, नैनीताल।

"मैं सहसा अपने अतीत में खो गया। मैं भी सन् 1987/88 में इन्हीं बच्चों की तरह राजकीय इण्टर कालेज मुनस्यारी का छात्र था, मैं गाँव से दूर मुनस्यारी के एक धुएं वाली एक छोटी सी कोठरी किराए पर रहकर पढ़ाई करता था। जिसका मासिक किराया 10 रुपए था। मुनस्यारी बाजार में सबसे कम किराए का यही कमरा था। घर की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। मुनस्यारी बाजार मेरे लिए कनॉटप्लेस से कम नहीं था। जिस कमरे में रहता था उसके नीचे होटल था। जिसमें जलेबी, बालूशाही, समोसे अरजी व भुटुवा बनता था। सुबह बांज बुरांश की गीली लकड़ी से चीची आवाज व धुएं से कमरा रहने योग्य नहीं रहता था।"

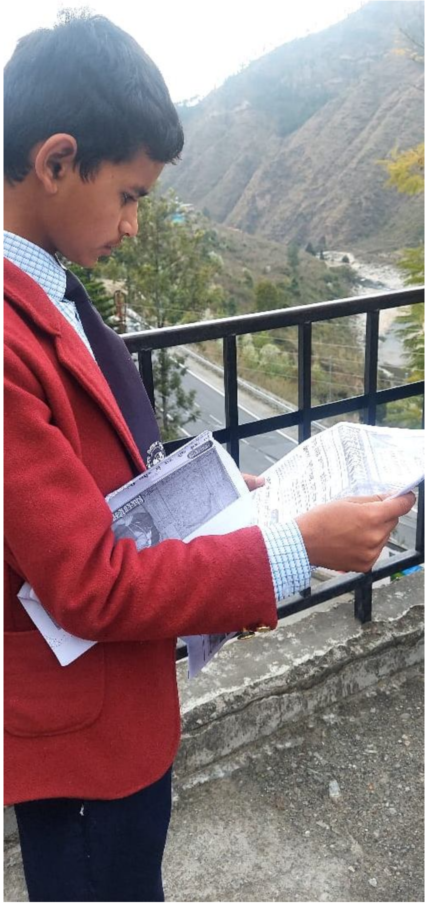

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारातघर

मो.न.
8958525979,
9411134775

नानासेम, मुनस्यारी
गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स
हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल, जनरल आर्डर सप्लायर्स

फोन सम्पर्क-
05961-222236

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

अब यादों में

गंगोत्री टोलिया बैडमिंटन खिलाड़ी के साथ कथक नृत्यांगना भी थी

धीरज उप्रेती

हल्द्वानी। होली के दिन 15 मार्च को महानगर हल्द्वानी के मधुबन इनक्लेव में रहने वाली श्रीमती गंगोत्री टोलिया के निधन की दुःखभरी सूचना मिली। स्वास्थ्य कारणों से वह असमय हम सबके बीच से विदा हो गई।

गंगोत्री टोलिया बेहतरीन खिलाड़ी के साथ ही कथक नृत्यांगना थी, यह बात बहुत कम लोगों को पता है। संघर्षों से आगे बढ़ी गंगोत्री दीदी में हर हमेशा सीखने और नया करने का जुनून था। वह पिघलता हिमालय से जुड़ी थी और हिमालय संगीत में संगीत विधा के कारण संलग्न थी। उनकी जिद थी कि हर बेहतर कार्य को करना चाहिये।

वन विभाग में अपनी सेवा के दौरान उनकी खेल प्रतिभा दिखाई दी। बैडमिंटन के क्षेत्र में उन्होंने कई उपलब्धियां प्राप्त कीं। उम्र व स्वास्थ्य की परवाह न करने वाली गंगोत्री टोलिया ने अपने विभाग की ओर से कई बार पुरस्कार जीते। उन्हें बेहतरीन खेल के लिये सरकार द्वारा सम्मानित किया गया।

दिसम्बर माह में वह सेवानिवृत्त हुई थीं और तब तक भी उन्होंने बैडमिंटन प्रतियोगिताओं में भागीदारी की। वह नियमित रूप से अपने खेल के प्रति सतर्क रहती थीं। खेल ही नहीं, संगीत से उन्हें लगाव था और वह जानती थीं कि संगीत लड़कपन नहीं वरन श्रेष्ठ विधा है। इसके लिये उन्होंने विधिवत तालीम लेनी शुरू की और कथक नृत्य विधा को अपनाया। वह अपने से काफी उम्र के बच्चों के साथ गायन-वादन की कक्षाओं में आने लगी और अतिरिक्त रियाज के लिये समय निकाला। समिति की कार्यशालाओं में होने वाली मंचीय प्रस्तुतियों में उन्होंने प्रदर्शन भी किया। वह हर हमेशा अपने अभ्यास को लेकर सतर्क रहती और चाहती थी कि बच्चें भी जागरूक रहें। गंगोत्री दीदी हमारे बीच नहीं रहीं लेकिन बेहतरी के लिये उनका जुनून प्रेरणादायक है। उन्हें पिघलता हिमालय परिवार की श्रद्धांजलि।

घर से बाहर अपनों का साथ
होटल लक्ष्य इन
मदकोट
सम्पर्क 7351285555
नरेन्द्र सिंह रावत

डॉ. पी.सी. वृजवाल
देवेन्द्रपुरी
बड़ी मुखानी
हल्द्वानी

न तेरा न मेरा Thats
APNA GHAR चौकोड़ी
HOTEL RESTRO BANQUET
YOGA MEDITATION | LIVE MUSIC | HOMELY FOOD | BIRTHDAY WEDDING
मो.- 9458920379, 6396098804
Near by- (माँ कोटगाड़ी, नौलिंग देव, पातालभुवनेश्वर)
पितृछाया- स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. जोगासिंह मर्तोलिया

सेवा संकल्प स्थानीय भागीदारी
'अवनी'
त्रिपुरादेवी
बेरीनाग

Hotel
Bala Paradise
Tiksain, Munsiari
Ph. 05961222237, 9412951678

धमोत होम स्टे
धरमघर/चकोड़ी
(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग, माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)
www.mountainheights.in
मो. 9760007148

जीतेन्द्र सिंह देऊपा
एडवोकेट
ग्राम- कुंजनपुर, गंगोलीहाट

Hayat Paradise
Bus Station
Munsiari
Ph. 09411556700, 9997733070

शगुन ड्राई फ्रूट
उप्रेती मार्केट
आँचल मिल्क पार्लर
(सौ.से- पिथौरागढ़ दुग्ध संघ)
गंगोलीहाट
ललित उप्रेती

जंगपांगी जनरल स्टोर
मदकोट रोड, दरांती मनुस्यारी
(सीमेन्ट, पेण्ट, हार्डवेयर सामग्री के लिये सुलभ स्थान)
मो.- 9760342346

Enjoy Beauty of
Himalaya at
MARTOLIA LODGE
Family Guest House-
Sarmoly, Munsiyari
A Home Away From
Home & Home Stay
Phone: (05961) 222287

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी(नैनीताल) से मुद्रित।

सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती फोन/मोबाइल 9458961490, 9411770280, 9411301014,

editorpighaltahimalay@gmail.com

Website- www.pighaltahimalay.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)